Vol. 6, Issue: 11, November: 2018
ISSN:(P) 2347-5404 ISSN:(O)2320 771X

भारत की विदेश नीति: एक समग्र परिचय

डॉ. रणजीत कुमार

मानव मामलों में विदेशी संबंधों की शुरुआत और इस प्रकार उनसे निपटने के लिए विदेश नीति की आवश्यकता उतनी ही पुरानी है जितनी स्वयं मानव सभ्यता। विदेश नीति एक देश की नीति है जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा और बढ़ावा देने के लिए जटिल रूप से तैयार किया गया है। इसे किसी देश की राष्ट्रीय नीतियों, उसकी आकांक्षाओं और दिन के अंतर्राष्ट्रीय क्रम और उसके दृष्टिकोण के प्रति दृष्टिकोण के रूप में माना जा सकता है। विदेश नीति के दो प्रमुख सिद्धांत देश की राष्ट्रीय सुरक्षा और समृद्धि हैं। एक लोकतांत्रिक सेटअप में, किसी भी अन्य सार्वजनिक नीति की तरह विदेश नीति सरकारी और गैर-सरकारी संस्थानों और समूहों की बातचीत से उत्पन्न होती है।

विदेश नीति में सहयोग और सहभागिता के लिए व्यापक क्षेत्र शामिल हैं जैसे कि राजनीतिक, रणनीतिक, आर्थिक और वाणिज्यिक, वैज्ञानिक और तकनीकी, सांस्कृतिक, कांसुलर, अंतर्राष्ट्रीय कानून, और आज की दुनिया में कभी नए विषय जैसे मानवाधिकार, बड़े सामाजिक मुद्दे, महिलाएं, युवा, विकलांग, मीडिया और सूचना, बौद्धिक संपदा, साइबरस्पेस, जलवायु परिवर्तन, भोजन, ऊर्जा, स्वास्थ्य, परिवहन, श्रम, प्रवास, साथ ही निरस्त्रीकरण, और आतंकवाद और ड्रग्स जैसे खतरों से लड़ते हैं। जैसे-जैसे ग्लोब सिकुड़ता जा रहा है, वैसे-वैसे तकनीकी विकास और सूचनाओं के प्रसार से प्रभावित होकर कैनवास अनिवार्य रूप से कभी भी बड़ा और व्यापक होता जाता है।

कुछ अंतरराष्ट्रीय संधि जैसे1648 में वेस्टफेलिया की संधि ने राष्ट्र राज्यों के बीच अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के आधुनिक चरण की शुरुआत को चिह्नित किया, फिर भी किसी देश की विदेश नीति के लिए कम महत्वपूर्ण नहीं दिया गया था। इस बीच वेस्टफेलियन प्रणाली आदर्श बन रही थी, भारत अपने उपनिवेशवादी आकाओं के लिए अपनी विदेश नीति निर्धारित करने के अधिकार को खो रहा था। औपनिवेशिक काल के दौरान, ब्रिटिश साम्राज्य के हितों ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की वाणिज्यिक और व्यापारिक नीतियों को निर्धारित किया। दिलचस्प बात यह है कि हमारी आजादी से पहले एक स्वदेशी विदेश नीति की अनुपस्थिति ने हमारे नेताओं और हमारे देश को किसी भी सत्ता धौंस या राजनीतिक / बाजार-आर्थिक विचारधारा को पूरा किए बिना अपनी नीति को स्वयं निर्धारित करने का मौका दिया।

प्रधानमंत्री नेहरू ने भारत की विदेश नीति पर अंकुश लगाते हुए कहा, "हमारी सामान्य नीति सत्ता की राजनीति में उलझने से बचना है और किसी भी अन्य समूह के खिलाफ शक्तियों के समूह में शामिल नहीं होना है। हमें दोनों (दोस्त) के लिए दोस्त होना चाहिए और फिर भी शामिल नहीं होना चाहिए।" शीत युद्ध के एक युग में, जहां प्रत्येक पावर ब्लॉकर्स ने कहा कि यदि आप उनके साथ नहीं हैं, तो आप उनके खिलाफ हैं, यह ज्ञान लिया साहस और दूरदर्शिता से प्रत्येक मुद्दे को उसकी खूबियों पर और उस पर कैसे निर्णय लिया जाए एक गठबंधन के बजाय हमारे प्रबुद्ध स्व-हित को प्रभावित किया। अपनी आजादी के लिए इतना संघर्ष करने के बाद, हम दूसरों के लिए अपनी स्वतंत्रता की स्वतंत्रता को समाप्त करने के बारे में नहीं थे, और इस प्रकार गैर-गठबंधन आंदोलन के लिए कोने की पत्थर को हमारी स्वतंत्रता के प्रारंभिक वर्षों में औपनिवेशिक शासन से रखा गया था।

भारत की विदेश नीति की मूल बातों का समावेश हमारे संविधान के अनुच्छेद 51 में कर दिया गया है जिसके अनुसार राज्य अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बढ़ावा देगा, राज्य राष्ट्रों के मध्य न्याय और सम्मानपूर्वक संबंधों को बनाए रखने का प्रयास करेगा, राज्य अंतर्राष्ट्रीय कानूनों तथा संधियों का सम्मान करेगा तथा पंच फैसलों द्वार निपटाने की रीति को बढ़ावा मिला।

भारतीय विदेश नीति के प्रारंभिक वर्षों में अपनाए गए उद्देश्य तथा सिद्धांत काफी स्पष्ट हो गए हैं परंतु स्थिति में परिवर्तन तथा सूक्ष्म पुनर्व्याख्याएं भी हुई हैं। भारत ने कभी भी एक देश को दूसरे देश से लड़ाने की नीति पर अमल नहीं किया। भारत में सरकार का ढांचा लोकतांत्रिक है। लेकिन विदेश नीति के मामले में भारत न पश्चिमी लोकतांत्रिक देशों से अधिक जुड़ा और न ही साम्यवादी देशों से इस कारण दूर हुआ।

शांति की विदेश नीति सदैव ही विश्व शांति की समर्थक रही है। भारत ने प्रारंभ से ही यह महसूस किया है कि युद्ध और संघर्ष नवोदित भारत के आर्थिक और राजनीतिक विकास को अवरुद्ध करने वाला है। अगस्त 1954 में पणिक्कर ने कहा था- भारत को इस बात की बड़ी चिंता है कि उसकी प्रगति को तथा सामान्य रूप से मानव-जाति की उन्नति को संकट में डालने वाला कोई युद्ध न हो।

भारत की विदेश नीति का प्राथमिक उद्देश्य एक गरीब और पिछड़े समाज से देश को बदलने में मदद करना था, जो अपने लोगों को बेहतर रहने की स्थिति दे सके, उनकी जरूरतों को पूरा कर सके और उन्हें उनकी क्षमता हासिल करने में मदद कर सके। नेहरू जी ने सोचा था कि भारत विदेश नीति बाहर से पूंजी प्रवाह का माहौल बनाने, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के आदान-प्रदान को बढ़ाने, भारत के बुनियादी ढांचे के विकास और हाइड्रोकार्बन संसाधनों के आयात और आधुनिक संसाधनों के आयात में मदद करेगी, जिसमें भारत पिछड़ा था। आज भी हमारी विदेश नीति का मकसद अपनी राष्ट्रीय हित का साधन है। हमारे निर्णय को संप्रभुता

बनाए रखते हुए हमारे राष्ट्रीय हितों को प्राप्त करने का उद्देश्य। यह प्रमुख शक्तियों और अर्थव्यवस्थाओं और पड़ोसी के साथ अच्छे संबंधों की आवश्यकता है।

हमारी विदेश नीति- शांतिपूर्ण सहअस्तित्व, गैर-हस्तक्षेप, विवादों के शांतिपूर्ण समाधान, गुटनिरपेक्षता, उपनिवेशवाद-विरोधी, नस्लवाद-विरोधी, बहुपक्षवाद, बहुलवाद, सामान्य और पूर्ण निरस्त्रीकरण, के सभी रूपों के विरोध पर आधारित है। आतंकवाद, उग्रवाद और कट्टरवाद, समर्थक विकास, सामान्य रूप से व्यापक वैश्विक सहयोग, और विशेष रूप से दक्षिण-दक्षिण सहयोग, और शांति, सहिष्णुता और वन वर्ल्ड में भारत की सभ्यता संबंधी मान्यताओं में दलदल हैं। ये निश्चित रूप से समय की कसौटी पर खरे उतरे हैं। वैश्विक समुदाय के एक खुले, समावेशी और जिम्मेदार सदस्य के रूप में भारत का मानना है कि टिकाऊ शांति केवल उस दुनिया में ही संभव है जिसमें सभी समृद्धि, प्रगति और खुशी में समान हितधारक हैं। हमने अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के लिए शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के पांच सिद्धांतों पंचशीला को भी प्रतिपादित किया।

फिर भी, यह 1989 में द्विध्रुवीय दुनिया का अंत था, अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में नाटकीय परिवर्तन, जिसने हमारे लिए नए महत्वपूर्ण अवसर खोले, जैसे दूसरों के लिए। पिछले बीस वर्षों में विश्व व्यवस्था में एक ऐतिहासिक और मौलिक परिवर्तन देखा गया है। वैश्वीकरण, बढ़ती अन्योन्याश्रयता, पारगमन की चुनौतियां सक्रिय रूप से आधुनिक दिन के अंतरराष्ट्रीय संबंधों को नतीजों और अभूतपूर्व कनेक्टिविटी द्वारा तीव्र परिणामों के साथ आकार दे रही हैं। इनमें से कुछ परिवर्तन सकारात्मक रहे हैं, जबकि कुछ प्रमुख वैश्विक खतरे हमारे जीवन में आकार ले चुके हैं, जैसे आतंकवाद, उग्रवाद, और ड्रग्स अपराध, पर्यावरण क्षरण, और सामूहिक विनाश के हथियारों का प्रसार, जिसमें गैर-राज्य अभिनेता भी शामिल हैं। अन्य सतत खतरों और नुकसानों में गरीबी, तस्करी और साइबर अपराध हैं।

आज के समय में ये चुनौतियां अधिक बहुआयामी हो गई हैं और किसी भी एक राष्ट्र - राज्य द्वारा हल नहीं की जा सकती हैं, इसके लिए उन्हें वैश्विक गठबंधन की आवश्यकता है, जैसे कि अफगानिस्तान, सीरिया, इराक की स्थिति, समाजों के कट्टरपंथीकरण। धर्म का नाम, कोरोना वायरस जैसे घातक वायरस का प्रकोप या मध्य-पूर्व में लंबे समय से चली आ रही उथलपुथल। समान रूप से, विकास और समृद्धि की खोज के लिए सामूहिक अंतर्राष्ट्रीय प्रयास की आवश्यकता होती है। आज, और निकट भविष्य में, जो मुद्दे भारत के परिवर्तन के लिए महत्वपूर्ण होंगे, वे वैश्विक हैं, वैश्विक समाधान की आवश्यकता है। भविष्य के ये मुद्दे, जैसे कि भोजन, पानी, ऊर्जा, कच्चे माल, जलवायु परिवर्तन, वैश्विक व्यापार और अंतर्राष्ट्रीय प्रवास, और निष्पक्ष वैश्वीकरण की मांग सभी को समान रूप से लाभान्वित कर रहे हैं, अंतर-सीमा वाले मुद्दे हैं। भारत अंतरराष्ट्रीय समुदाय के साथ निकट परामर्श और सहयोग में सक्रिय रूप से, तत्काल और रचनात्मक रूप से इन्हें संबोधित करने में लगा हुआ है।

1989 में दसवें शीत युद्ध की समाप्ति के साथ भारत को अपनी विदेश नीति पर फिर से विचार करना पड़ा, और पुनर्विचार करना पड़ा कि देश के लिए गैर-गठबंधन का क्या मतलब है क्योंकि सोवियत संघ के विघटन ने भारत के अंतर्राष्ट्रीय उत्तोलन को बहुत दूर कर दिया। 1980 के दशक के उत्तरार्ध और 1990 के दशक के प्रारंभ में आर्थिक संकट ने हमें अपनी आर्थिक नीतियों का पुनर्मूल्यांकन किया और हमें अपनी अर्थव्यवस्था को दुनिया में खोलने के लिए प्रेरित किया। इसका मतलब संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया और पश्चिम के साथ एक रणनीतिक द्विपक्षीय संबंध को मजबूत करना भी था। हालाँकि, हमारी अर्थव्यवस्था के वापस खुलने से हमारी जैसी विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के लिए एक वरदान साबित हुआ, जो एक आकर्षक निवेश गंतव्य के रूप में काम कर रहा था और एक बड़े बाजार का वादा किया गया था। इसने हमारे देश के लिए हमारे सामरिक स्थान को बढ़ाकर और हमारे लिए महत्वपूर्ण मुद्दों पर निर्णय लेने वाली स्वायत्तता के नए रास्ते खोले।

हम अपनी महत्वाकांक्षाओं के पैमाने में उल्लेखनीय परिवर्तन के साथ, और उन्हें प्राप्त करने की हमारी क्षमता में भारत को विकसित करने की अपनी खोज में सबसे अनुकूल मोड़ पर आ गए थे। भारतीय पहल के साथ वैश्विक एजेंडा पर चल रही संयुक्त राष्ट्र सुधार प्रक्रिया, वैश्विक उच्च तालिका पर भारत को जगह देने के लिए एक स्पष्ट रूप से अधिक इच्छा दिखाती है। व्यापार और आर्थिक मुद्दों पर, भारतीय आपत्तियों को आसानी से अनदेखा नहीं किया जाता है। जलवायु परिवर्तन से संबंधित मुद्दों पर, हम अपनी स्थिति के लिए एक व्यापक समर्थन का निर्माण करने में सक्षम हैं। विकासशील देश हमारे नेतृत्व का पालन करते हैं और विकसित देश हमारे परामर्श और सहयोग की तलाश करते हैं। दूसरे शब्दों में, भारत वैश्विक निर्णय लेने और प्रबंधन में एक प्रमुख आवाज के रूप में उभरा है, और उभरती हुई सामरिक सामरिक वास्तुकला में एक पुल और संतुलन शक्ति के रूप में। उस अर्थ में, गुटनिरपेक्षता की भावना और उद्देश्य, दक्षिण के विकासशील देशों की एकजुटता और नेहरू की प्रेरक दृष्टि, अभी भी जीवित हैं और हमारे एजेंडे का अभिन्न अंग हैं। हमारी विदेश नीति और कूटनीति, उस सीमा तक, हमारे राष्ट्रीय हितों की रक्षा और आगे बढ़ाने में परिणाम निकले हैं।

परमाणु हथियार रखने वाला देश होने के बावजूद, निरस्त्रीकरण, अप्रसार और अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा के लिए हमारी दीर्घकालिक प्रतिबद्धता को व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है। समय और फिर से हम अपने पड़ोसियों, और संकट में दूसरों तक तेजी से पहुँचे, जैसे कि अस्सी के दशक में मालदीव, और 2004 के हिंद महासागर की सुनामी के बाद। भारत जी -8 जैसे मंचों में दक्षिण के देशों के हितों को चैंपियन बनाता है। जी -20, जी -24, यूएन, आईएमएफ और विश्व बैंक, विश्व व्यापार संगठन, और जलवायु जैसे अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में मिलते हैं। आज भारत के दुनिया के दूसरे सबसे अधिक आबादी वाले देश, सबसे अधिक आबादी वाले लोकतंत्र और मामूली दरों पर नौवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने के अलावा अधिकांश देशों के साथ औपचारिक राजनयिक संबंध हैं, जो शक्ति समानता खरीदकर सबसे तेजी से बढ़ते हुए चौथे स्थान पर है।

यद्यपि भारत किसी भी बड़े सैन्य गठबंधन में नहीं है, लेकिन यूरोपीय संघ सहित प्रमुख शक्तियों के साथ हमारे संबंधों ने रणनीतिक गहराई और हितों की आत्मनिर्भरता हासिल कर ली है।

संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ हमारे संबंध एक दूसरे को 'प्राकृतिक सहयोगी' के रूप में देखने वाले दोनों देशों के साथ पारस्परिक लाभ के विचार पर समर्पित है। 2005 में ऐतिहासिक सिविल न्यूक्लियर डील पर हस्ताक्षर करने को दोनों देशों के बीच परमाणु हथियारों की सुरक्षा और अंतरराष्ट्रीय भागीदारी पर रणनीतिक सहयोग में एक कदम के रूप में देखा गया था।

दोनों के बीच हितों के बढ़ते अभिसरण को आतंकवाद पर युद्ध और जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए एक वैश्विक गठबंधन बनाने पर उनके आपसी रुख में देखा जा सकता है। हालांकि, हितों और विश्वासों के विचलन के कुछ क्षेत्रों का अस्तित्व तब बना रहता है जब अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों से निपटने की बात आती है, विशेष रूप से किसी अन्य देश में सैन्य हस्तक्षेप के विचार पर जो भारत इससे असहमत है। संयुक्त राज्य अमेरिका को निर्यात किए गए भारतीय वस्तुओं पर यूएस की ओर से जीएसपी की हाल ही में वापसी और भारतीय पक्ष से विशिष्ट अमेरिकी सामानों पर प्रतिशोधी टैरिफ बताते हैं कि इस द्विपक्षीय संबंध में अभी भी मौजूद हैं और केवल समय दिखाएगा कि यह रिश्ता कैसे विकसित होता है।

इसके साथ ही, भारत की विदेश नीति ने रूस के साथ रक्षा, व्यापार, सूचना प्रौद्योगिकी, हीरे, परमाणु ऊर्जा सहित ऊर्जा और विज्ञान और प्रौद्योगिकी में हमारे ऐतिहासिक सहयोग का विस्तार करते हुए, रूस के साथ अपने बहुत करीबी रणनीतिक संबंधों को संरक्षित किया है। आतंकवाद के खिलाफ हमारी आम लड़ाई इसमें एक विशेष तत्व है।

हमारे पड़ोस नीति दृष्टिकोण के संदर्भ में, भारत दक्षिण-एशियाई क्षेत्र की स्थिरता और समृद्धि का एक महत्वपूर्ण कारक है, भारत का प्रयास हमेशा दक्षिण एशिया के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण का निर्माण करना रहा है, सभी के साथ मैत्रीपूर्ण और सहकारी संबंधों को विकसित करने के लिए नीतियां तैयार करना। हमारे पड़ोसी, संप्रभु समानता और आपसी सम्मान के आधार पर, उनके साथ अंतर-निर्भरता को बढ़ावा देने, एक दूसरे की स्थिरता में दांव बनाने, और सभी स्तरों पर सीमा पार बुनियादी ढांचे और अन्य लिंक और कनेक्टिविटी विकसित करने के लिए। हमारी उच्च आर्थिक वृद्धि इस क्षेत्र को प्रभावित करती है, जिससे हमारे पड़ोसियों को भारत की भागीदारी से लाभान्वित होने के अवसर बढ़े हैं। हम एकतरफा इशारों को जारी रखते हैं और आर्थिक और अन्य रियायतों का विस्तार करते हैं, जैसा कि मुक्त बाजारों में भारत ने श्रीलंका, नेपाल और भूटान के साथ मिलकर स्थापित किया है। इसी तरह की व्यवस्था हमारे अन्य पड़ोसियों के साथ भी संभव है, साथ ही उनमें से प्रत्येक के साथ सीमा पार बुनियादी ढांचे के निर्माण और उन्नयन में भारतीय

निवेश के लिए भी। साथ ही भारत ने हमेशा अपने पड़ोसियों से अपेक्षा की है कि वे विशेष रूप से भारत से जुड़ी समस्याओं के प्रति संवेदनशील हों, जब यह सीमा पार आतंकवाद और इससे निपटने के लिए आता है।

यह एक प्रमुख सौदा ब्रेकर है, जो पाकिस्तान के साथ हमारे संबंधों को बनाए रखने के बीच खड़ा है, पुलवामा में 26/11 के आतंकवादी हमले और हाल ही में हुए हमले पाकिस्तानी सरकार की अक्षमता को वहां से निकलने वाले आतंकवाद को नियंत्रित करने के लिए दिखाते हैं। इसके अलावा भारत की सुरक्षा चिंताओं के लिए पाकिस्तानी सरकार की ल्यूक ने गर्म प्रतिक्रिया दी, द्विपक्षीय संवादों को जारी रखने के लिए प्रोत्साहन दिया। हालाँकि हाल ही में पाकिस्तान में आतंकवाद निरोधक अदालत द्वारा हाजीफ सईद (भारत में 26/11 के हमलों को अंजाम देने का आरोप) से पता चलता है कि इस द्विपक्षीय संबंध में अभी भी बहुत कुछ आशावादी है। कश्मीर का मुद्दा भारत और पाकिस्तान दोनों के बीच दूरी बनाए राखी है।भारत ने हमेशा से इसे अपना अभिन्न अंग माना है। दोनों देशों के बीच अधिक से अधिक क्षेत्रीय और आर्थिक एकीकरण की आवश्यकता है, आपसी रणनीतिक हितों के क्षेत्रों में बातचीत में वृद्धि हुई है और दोनों देशों की समस्याओं को बेहतर ढंग से हल करने के लिए बातचीत जारी है।

हाल के वर्षों में हमारा प्रयास चीन के साथ एक बहुआयामी संबंध विकसित करने का रहा है, यहां तक कि हमारे बीच हमेशा प्रतिस्पर्धा और सहयोग दोनों रहेगा। दोनों के बीच सीमा संबंधी विवाद के अलावा, भारत और चीन आपसी हितों के अभिसरण के क्षेत्रों पर एक साथ काम करने की कोशिश कर रहे हैं, जलवायु परिवर्तन और विश्व व्यापार वार्ता।

हालांकि चीन की उच्च आर्थिक वृद्धि के साथ और यह सैन्य प्रगति बढ़ रही है, यह हमारे देश के लिए अन्य दक्षिण-एशियाई देशों, जापान, दक्षिण कोरिया, वियतनाम, ऑस्ट्रेलिया के साथ बेहतर संबंध बनाने और उनके साथ बेहतर सहयोग और समझ रखने के लिए महत्वपूर्ण है।

भूटान एक प्रमुख पड़ोसी है, जिसके साथ भारत का पारस्परिक रूप से एकीकृत संबंध है। भूटान के जलविद्युत और उसके सड़क और रेल नेटवर्क के विकास में मदद से दोनों देशों को बेहतर आर्थिक सहयोग मिला है। इन रेल और सड़क नेटवर्क का निर्माण भी सीमा पार पारेषण लाइनों के रूप में होता है, सभी भारतीय सहयोग के साथ, भूटान की पहुँच को बढ़ाते हैं, जिससे पूरे क्षेत्र को लाभ होता है।

भारत और नेपाल एक रिश्ते को न केवल आर्थिक सहयोग तक सीमित रखते हैं, बल्कि खुली सीमाओं और एक दूसरे के साथ हमारी संस्कृति के आदान-प्रदान की विशेषता भी है। भारत एक लोकतंत्र के लिए राजनीतिक परिवर्तन के दौरान नेपाल की मदद करने के लिए प्रतिबद्ध है, भले ही इसने हमारे पारंपरिक रूप से मजबूत

द्विपक्षीय संबंधों को अस्थायी रूप से धीमा कर दिया है, लेकिन भारत नेपाल को हर संभव मदद करने के लिए पूरी तरह से तैयार है।

श्रीलंका के साथ हमारे संबंध और भी मजबूत हुए हैं, दोनों देशों के बीच संपर्क एक सर्वकालिक उच्च स्तर पर है। एक व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता हमारे आर्थिक एकीकरण और एक दूसरे के साथ सहयोग को आगे बढ़ाने के लिए श्रीलंका के साथ बातचीत की गई है। भारत अविभाजित श्रीलंका के ढांचे के भीतर एक विश्वसनीय शक्ति साझाकरण पैकेज के साथ श्रीलंका की जातीय समस्या को निपटाने के लिए एक बातचीत की गई राजनीति बयान का समर्थन करना जारी रखता है और अपने मुख्यधारा के साथ तमिल अल्पसंख्यक के पुन: एकीकरण का समर्थन करता है।

बांग्लादेश के साथ हमारी निकट साझा सीमा को देखते हुए उग्रवाद, अवैध प्रवासन, और अन्य की समस्या, आपसी गलतफहमियों और गलत अपेक्षाओं से बढ़ी हुई समस्याओं को अभिसमय के क्षेत्रों में सहयोग करते हुए निरंतर द्वि-पक्षीय वार्ता और कूटनीति से निपटने की कोशिश कर रहे हैं। आपसी लाभ के।

भारत 1.5 बिलियन डॉलर की व्यापक मानवतावादी, वित्तीय और परियोजना सहायता प्रदान करने, अफगानिस्तान की अपनी प्राथमिकता की जरूरतों का जवाब देने, इसके पुनर्निर्माण के लिए और सुरक्षा स्थिति के रूप में एक बहुलवादी और समृद्ध समाज के निर्माण में निरंतरता के संदर्भ में प्रतिबद्ध है। भारत के लिए चिंता का विषय है। क्षेत्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने में अफगानिस्तान को महत्वपूर्ण माना जाता है। भारत मालदीव के साथ घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण संबंध साझा करना जारी रखता है और मानव संसाधन विकास, सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल और पर्यटन जैसे प्रमुख क्षेत्रों में अपनी बुनियादी सुविधाओं के विकास में मालदीव की सहायता करने के संदर्भ में सहयोग देखा जाता है। हमारे लिए दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (SAARC) क्षेत्र की प्रगति और सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए भारत की प्रतिबद्धता का प्रतिनिधित्व करता है जिसे सहयोग के माध्यम से आगे बढ़ाया जा सकता है जिसमें भारत एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हालाँकि, मोदी सरकार के आने के साथ, हमारी विदेश नीति में बदलाव को देखा जा सकता है, जहाँ द-बेग ऑफ इनिशिएटिव फॉर मल्टी-सेक्टोरल टेक्निकल एंड इकोनॉमिक कोऑपरेशन (BIMSTEC) पर अधिक ध्यान दिया गया है, जिसमें सात सदस्य राष्ट्र शामिल हैं। बंगाल की खाड़ी के तटवर्ती और समीपवर्ती क्षेत्रों में एक क्षेत्रीय क्षेत्रीय एकता का निर्माण होता है। यह सात सदस्य राज्यों का गठन करता है: बांग्लादेश, भूटान, भारत, नेपाल, श्रीलंका और दक्षिण पूर्व एशिया से दो व्युत्पन्न, और म्यांमार और थाईलैंड सहित दक्षिण पूर्व एशिया से दो। इस तरह के गठजोड़ के निर्माण का उद्देश्य वैश्वीकरण के हमले को कम करके और क्षेत्रीय संसाधनों और भौगोलिक लाभों का उपयोग करके आम हितों के विभिन्न क्षेत्रों में आपसी सहयोग के माध्यम से साझा और त्वरित विकास को बढ़ावा देना था। कई अन्य क्षेत्रीय समूहों के

विपरीत, बिम्सटेक एक सेक्टर-संचालित सहकारी संगठन है। व्यापार, प्रौद्योगिकी, ऊर्जा, परिवहन, पर्यटन और मत्स्य पालन सहित छह क्षेत्रों के साथ शुरू - क्षेत्रीय सहयोग के लिए।

हमारी लुक-ईस्ट नीति ने एशिया-प्रशांत में नए अवसरों और साझेदारी को बनाया है। हमने दुनिया भर के महत्वपूर्ण देशों जैसे दक्षिण कोरिया, दक्षिण अफ्रीका, सऊदी अरब, मैक्सिको और ब्राजील के साथ-साथ आसियान, अफ्रीकी संघ, अरब लीग और संगठन के साथ अपने राजनीतिक और आर्थिक संबंधों को मजबूत किया है। अमेरिकी राज्यों। इसके अलावा, नए महत्वपूर्ण बांड विकसित और पोषित किए जा रहे हैं, जैसे कि ब्रिक्स - ब्राजील, रूस, चीन और दक्षिण अफ्रीका, IBSA के साथ - ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका, RIC के साथ - रूस और चीन, भारत-अफ्रीका शिखर सम्मेलन के साथ त्रिपक्षीय पहल।

भारत ने पारस्परिक विकास और सहयोग के आधार पर निर्धारित राज्यों और अंतर्राष्ट्रीय गठबंधन / अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ द्विपक्षीय और बहुपक्षीय संबंध विकसित करने का प्रयास किया है। ये कार्यक्रम, भारतीय संसाधनों, विशेषज्ञता और अन्य विकासशील देशों को तेजी से विकसित करने में मदद करने के लिए सहयोग प्रदान करते हैं, दोस्तों को भी जीतते हैं और देश के लिए सद्भावना उत्पन्न करते हैं। विदेश मंत्रालय के पास अब ऐसे सभी भारतीय सहयोग, जैसे कि क्रेडिट की लाइनें, और भारत तकनीकी और आर्थिक सहयोग (ITEC) के तहत प्रशिक्षण, विशेषज्ञों, अध्ययन के माध्यम से समन्वय और प्रशासन करने के लिए एक पूर्ण विकास साझेदारी प्रणाली और तंत्र है। पर्यटन, परियोजनाएं, परामर्श और आपदा राहत और मानवीय सहायता, दुनिया भर के कुछ 160 देशों में, सभी साझेदारी, अन्योन्याश्रय और पारस्परिक लाभ की भावना से एक सबसे उल्लेखनीय भारतीय विदेश नीति की सफलता अमेरिका के साथ पहला समझौता था और बाद में कई अन्य प्रमुख देशों ने हमें परमाणु ऊर्जा प्रौद्योगिकी, सामग्री और अनुसंधान का उपयोग करने में सक्षम बनाया, अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA) से छूट में, इस प्रकार प्रभावी रूप से समाप्त हो गया। प्रतिबंधों के तहत हम काम कर रहे थे, और शांतिपूर्ण अनुप्रयोगों के लिए संवेदनशील और दोहरे उपयोग वाली तकनीक और सामग्री प्राप्त करने के लिए दरवाजे खोल रहे थे। फिर भी, सामान्य और पूर्ण परमाणु निरस्त्रीकरण के लिए भारत की प्रतिबद्धता हमेशा की तरह दृढ़ रही है। हमने केवल 1968 की परमाणु अप्रसार संधि और 1996 की व्यापक परीक्षण प्रतिबंध संधि के साथ शुरू होने वाले मनमाने भेदभाव के अधीन होने से इनकार कर दिया है। उचित बहुपक्षीय बातचीत के माध्यम से शस्त्र सीमा और निरस्त्रीकरण भारत के विश्व दृष्टिकोण के लिए केंद्रीय रहा है, साथ ही परमाणु प्रौद्योगिकियों के शांतिपूर्ण उपयोग की स्वतंत्र रूप से अनुमति देता है। हमारी पहल और प्रयासों के लिए आंशिक रूप से, आतंकवाद और सामूहिक विनाश के हथियारों का प्रसार (WMDs) वैश्विक एजेंडे में उच्च रहा है। अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद शांति और स्थिरता के लिए एक बड़ा खतरा बना हुआ है।

परिणाम, आतंकवाद, गुप्त परमाणु प्रसार, उग्रवाद और कट्टरपंथ के रूप में न केवल भारत बल्कि दुनिया द्वारा महसूस किए जाते हैं। आतंकवाद और सामूहिक विनाश के हथियारों के बीच सांठगांठ भयावह हो सकती है। इनमें से कुछ देशों के न केवल आतंकवाद से संबंध हैं, बल्कि उन्होंने बल के माध्यम से यथास्थिति बदलने या परमाणु ब्लैकमेल का सहारा लेने की नीतियों का भी लाभ उठाया है। ये मुद्दे भारत के लिए विशेष चिंता का विषय हैं क्योंकि इन सभी गतिविधियों का केंद्र हमारे पड़ोस में है। आतंकवाद के विरूद्ध वैश्विक युद्ध में आतंकवाद के बीच दोहरे मापदंड के लिए कोई जगह नहीं हो सकती है, जिसे बर्दाश्त नहीं किया जा सकता है और इसके मूल कारणों के समाधान की आवश्यकता है। काउंटर टेररिज्म के क्षेत्र में वैश्विक सहयोग को मजबूत करने के लिए कुछ प्रगति की गई है।

भारत दुनिया भर के हॉट-स्पॉट में संयुक्त राष्ट्र के शांति अभियानों में एक नियमित और सबसे बड़ा योगदानकर्ताओं में से एक रहा है। .भारत अपने निर्णय लेने में अधिक पारदर्शिता, इक्विटी, लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व के द्वारा संयुक्त राष्ट्र के मजबूत होने की तत्काल आवश्यकता पर दृढ़ विश्वास करता है; और शांति और सुरक्षा की रक्षा के लिए अपने सबसे बुनियादी उद्देश्यों के लिए, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद को स्थायी और गैर-स्थायी दोनों श्रेणियों में विस्तारित किया जाना चाहिए। भारत ने अपनी निर्विवाद साख के आधार पर एक नए जोड़े गए स्थायी सदस्य के लिए खुद को पेश किया। यह पहले से ही संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, और रूस सहित सभी स्थायी सदस्यों के साथ-साथ जर्मनी, जापान और ब्राजील सहित संयुक्त राष्ट्र के बहुत बड़े सदस्य देशों द्वारा सार्वजनिक रूप से समर्थित है।

हमारी नई उभरती दुनिया में, कई नई महत्वपूर्ण प्रक्रियाएं हैं जो दुनिया को अधिक से अधिक बहुपक्षवाद और बहुपक्षीय विश्व व्यवस्था की ओर अग्रसर करती हैं। चूंकि यूएनएससी का विस्तार प्रक्रियात्मक रूप से कठिन है, इसलिए यह प्रभाव दिन की वास्तविकता के अनुरूप कई अन्य प्रक्रियाओं या संरचनाओं के निर्माण का है, जिसमें नए खिलाड़ी शामिल हैं जो कल की समस्याओं के समाधान में योगदान दे सकते हैं। जिस तरह जी -20 द्वारा जी -8 के प्रतिस्थापन को वैश्विक आर्थिक शक्ति संतुलन में विवर्तनिक बदलाव की मान्यता में एक ऐतिहासिक घटना है, उसकी सफलता को वैश्विक राजनीतिक वास्तुकला के समान रीमॉडेलिंग के लिए मार्ग प्रशस्त करना चाहिए, जो राजनीतिक पी के समान है। जबकि ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन की घटनाओं के लिए प्रमुख जिम्मेदारी, वातावरण में ग्रीन हाउस गैसों के संचय के कारण होती है, जो उन्नत देशों के साथ है, भारत जैसे विकासशील देशों द्वारा इसका प्रतिकूल प्रभाव सबसे गंभीर रूप से महसूस किया जाता है। इस संदर्भ में 'साझा जिम्मेदारी' की किसी भी अवधारणा को विकास के अपने अधिकार को सुनिश्चित करना शामिल होना चाहिए। भारत जो चाहता है वह समान रूप से बोझ-साझाकरण है, जिसमें विकासशील देशों द्वारा वैश्विक सार्वजनिक वस्तुओं के रूप में स्वच्छ प्रौद्योगिकियों तक पहुंच और सहयोगी अनुसंधान एवं विकास और उनके परिणामों को साझा करना शामिल है।

Vol. 6, Issue: 11, November: 2018
ISSN:(P) 2347-5404 ISSN:(O)2320 771X

भारतीय मूल के लगभग 28 मिलियन भारतीय प्रवासी विदेशों में रहते हैं और काम करते हैं। वे मातृ देश के साथ एक महत्वपूर्ण संबंध बनाते हैं। वे उन देशों के लिए विश्वसनीय योगदान देते हैं जो वे रहते हैं, और अपने संसाधनों और प्रेषण के साथ भारत में भी - दुनिया में सबसे बड़ा, उद्यमशीलता और तकनीकी कौशल, और सद्भावना। भारत की विदेश नीति की एक महत्वपूर्ण भूमिका उनके मेजबान देशों के कानूनों के ढांचे के भीतर उनके कल्याण और कल्याण को सुनिश्चित करने में रही है। वे हमारे राजनयिक मिशनों की जिम्मेदारी का एक महत्वपूर्ण पहलू हैं।